

---

# Gangashtakam 9

गङ्गाशतकम् ९

## Document Information

---

Text title : Gangashtakam 9

File name : gangAShTakam9.itx

Category : devii, devI, nadI, aShTaka

Location : doc\_devii

Author : Dhundiraja Bhatta

Transliterated by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Proofread by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Description/comments : Ganga Jnana Mahodadhi compiled by Acharya Ramapada Chakravarty

Latest update : June 13, 2010

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 13, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Gangashtakam 9

---

गङ्गाष्टकम् ९

---



श्रीगणेशाय नमः ।

यलद्विलोलवीचिविख्यलद्विवृत्तमीनमु-  
ल्लसत्सडस्रपत्रविस्फुरत्परागपाटलम् ।  
डिमायलख्यलज्जलप्रवाडपावितापिल-  
प्रपञ्चमिन्दुयुडमौलिमन्दिरं मडोऽवतात् ॥ १ ॥

रसालशालतालसत्तमालजालमालस-  
द्विशालभालभस्मभृत्प्रवाडभास्वरं मडः ।  
सरोजगन्धसम्भ्रमन्मिलिन्दपुञ्जमञ्जुलै-  
गुञ्जमानजङ्घुन्दिनीतटं भजाभडे ॥ २ ॥

यलत्तरङ्गमालमुखलज्जुषोर्णजालमुज्वल-  
त्प्रभाविशालमालमञ्जुवीरुधां गृडम् ।  
परिज्वलद्भवानलप्रभावलोडितापिल-  
प्रपञ्चसिञ्चनामृतं पुनातु जङ्घुजापयः ॥ ३ ॥

करालतिथ्यकालकालसर्पसर्पदुल्लसत्  
प्रभाविषानलावसेकसत्सुधारसैः (समैः) ।  
कुरु त्वमीश्वरप्रियाङ्गने मद्दङ्गसङ्गता-  
पिलाघसङ्गभङ्गमुल्लसत्तरङ्गरिङ्गितैः ॥ ४ ॥

निमज्जदागलालकालिजालशालिसम्यगु-  
ल्लसत्सुरौघसुन्दरीमुभारविन्दसुन्दरम् ।  
मिलत्पुरार्भकस्फुरत्तराभिघातविद्रव-  
त्रिराडुलोरुमीनमम्बु भाति शम्भुभूषणम् ॥ ५ ॥

उदञ्चदुद्धतापिलच्छटामिलद्विभावसु-  
प्रभाविऽम्बितातियञ्चदभ्रतारकोत्तरम् ।  
विलोलवीचिविख्यलत्समीरनीतसीकरं

पुरास्मित्तनस्थितं पुनातु पावनं पयः ॥ ६ ॥

सुराधिराजराजधर्मराजमुष्यनिर्जरा-

तिराजिपुण्यराशिरोशुसिद्धिदा कलौ (पुनः) ।

परामृतप्रदायिनी सुरास्तिपाद्यारिणी

पुरास्तिमौलिमालिनी सुरापगा विराजते ॥ ७ ॥

मडीधरेन्द्रपन्नगेन्द्रकुन्दयन्दनद्रुम-

स्फुरत्करीन्द्रमाङ्गलामृतद्रवोपनायनम् ।

मिलन्निलिम्पसुन्दरीकपोलपत्रवल्लरी-

गलत्परागपिञ्जरीकृतं पयः पुनातु माम् ॥ ८ ॥

अनन्तभट्टसूरिसूनुद्वुष्टिदेराजसत्त्ववि-

प्रकल्पितं विचित्रपथयातुरीविभूषितम् ।

सुरापगाष्टकं नरः पठन्निदं स याति तत्

परं पदं प्रभूतभूमभागवैभवः (सदा) ॥ ९ ॥

एति श्रीमन्मडीपण्डितधुरश्रतुस्समुद्रराजमान्यधुलोपनामकानन्तात्मज-

द्वुष्टिदेराजभट्ट विरचितं श्रीगङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

---



Gangashtakam 9

pdf was typeset on June 13, 2020



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

